राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता मधुबनी के अशोक सिंह युवाओं के लिए बने प्रेरणास्रोत

कभी 50 हजार था सपना, आज कमा रहे 20 लाख

पंकज कुमार सिंह | पटना
@pankjksingh123

हौसला बुलंद हो तो सफलता कदम चूम लेती है। सामान्य परिवार का युवक अशोक सिंह कभी सात भर में 50 हजार रुपए कमाने की कल्पना नहीं कर सकता था। आज मछलीपालन से वह प्रतिवर्ष 15 से 20 लाख रुपए कमा रहा है। मछली उत्पादन के लिए केंद्रीय अंतस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर में पश्चिम बंगाल ने 2010 में उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया है।

मधुबनी जिले के दहिया खैरवार के अशोक ने सफलता की ऐसी कहानी लिखी, जिससे अन्य लोग भी प्रेरित हो रहे हैं। अन्य युवक भी मछलीपालन से लाभ कमाने लगे हैं। इससे बिहार के कई जिलों के मछलीपालकों को आसानी से मछली बीज मिल रहा है। पहले बीज के लिए लोगों को पश्चिम बंगाल व अन्य राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता था।

मछली के साथ अशोक कुमार।

22 तालाब के हैं मालिक

आज उनके फर्म का कुल क्षेत्रफल 55 एकड़ है, जिसमें 15 एकड़ अपना निजी तालाब है एवं 40 एकड़ तालाब जमीन मालिकों से वार्षिक किस्त पर है। निजी तालाबों के लिए उन्हें प्रति हेक्टेयर 30-40 हजार रुपए वार्षिक किस्त के रूप में देना पड़ता है। उनके पास अब 22 तालाब हैं, जिनमें दो बड़े तालाबों में प्रजनक मछलियों को रखते हैं और शेष में नर्सरी है। हैचरी में रेहू, कतला, मृगल, ग्रास कार्प, सिल्वर कार्प एवं कॉमन कार्प का स्पॉन उत्पादन होता है। इससे मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, वैशाली आदि जिलों के मछली पालकों को सालों भर मछली बीज मिल जाता है। अपनी कमाई से उन्होंने 5 एकड़ जमीन खरीद कर फर्म का विस्तार किया है।

दूसरों को भी सिखा रहे

वहां 5 मत्स्य हैचरी की स्थापना हो गई है। वे दूसरे किसानों को मत्स्यपालन का गुर भी सिखाते हैं। अशोक बताते हैं कि बचपन से ही उन्हें मछलीपालन का शौक था। 2001 में मछलीपालन शुरू किया। फिर बाद में बूस्टर हैचरी से स्पॉन लाकर नर्सरी का कार्य शुरू किया। 2004 में उन्होंने मत्स्य हैचरी की। 2006 में उन्होंने 5 लाख रुपए महाजन से कर्ज लेकर खेसरी मत्स्य हैचरी की नींव रखी और 2007 से उत्पादन शुरू हुआ। पहले तो बैंक से लोन मिलने में परेशानी होती थी, लेकिन बाद में उन्हें 14.50 लाख रुपए लोन मिला, जिससे उन्होंने फर्म का विस्तार किया।